

पद २५६

(राग: झिंजोटी – ताल: दीपचंदी)

ओढलिया है शाम कामरि काली ॥ध्रु.॥ सांवरी सूरत वांके रसभरी
अँखियां । इन हिन कवन सुकुमारी ॥१॥ जमुना के नीर तीर धेनु
चरावे । बन्सी बजावे मनहारी ॥२॥ मानिक के प्रभु दीनदयाला ।
ताके चरन बलिहारी ॥३॥